श्री

जीवविचार प्रकरण.

बालावबोध सहित.

आ ग्रंथ

जीवोनी जातियो संबंधी संक्षेपविचार जा

णवानी इच्छा करनार विवेकी सज्ज

नोने पठन पाठन करवाने अर्थे

शा० भीमसिंह माणकाख्य श्रावकें

श्री मुंबापुरीमध्यें

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो

संवत् १९५१ ना आषाढशुक्ल द्वितीया.

२६०१

॥ ॐ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री जीवविचार प्रकरण प्रारंभः ॥

प्रथम ग्रंथकर्ता श्रीशांतिसूरि, आद्यमां मंगलाचरण करतां प्रयोजनादिकनुं सूचन करे छेः—

॥ आर्यावृत्तं ॥

भुवण पईवं वीरं, नमिऊण भणामि
अबुह बोहत्थं ॥ जीव सरूवं किंचि
वि, जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ १ ॥

अर्थः— (भुवण के०) त्रण्य भुवन, एटले चतुर्दश रज्ज्वात्मक जे लोक, तेनेविषे (पईवं के०) प्रदीप समान अने सकल पापने दूर करनारा एवा (वीरं के०) श्रीमहावीर स्वामीनें, (नमिऊण के०) नमस्कार करीने, (जह के०) जेम, (पुव्वसूरीहिं के०) सुधर्म्मस्वाम्यादिक पूर्वसूरिउंएं, (भणियं के०) पोताना आगममां प्रगट कर्युं छे, तेम हुं पण, (अबुहबोहत्थं के०) तत्त्व विचारनेविषे अज्ञानी जीवोने बोध थवाने अर्थें, (किंचिवि के०) लेशमात्र, (जीवसरूवं के०) जीवनुं स्वरूप, (भणामि के०) कहुं छुं ॥ १ ॥

हवे जीवना भेद कही बतावे छेः—

जीवा मुत्ता संसा, रिणो अ तस थाव
रा अ संसारी ॥ पुढवि जल जलण
वाउ, वणस्सई थावरा नेआ ॥ २ ॥

अर्थः— (जीवा के०) जीव ते एक मुक्तिना तथा बीजा संसारी, ए बे प्रकारना छे; तेओमांना (मुत्ता के०) जेउ सकल कर्मरूप पटलोनो क्षय करीने मुक्ति पदने पाम्या छे, तेउ सिद्ध जीवो कहेवाय छे; (अ के०) तथा (संसारिणो के०) जेमां संसृतिने पमाय छे ते संसार कहेवाय छे, एवा संसारनी नरकादि चार गतिउमां जेउ भ्रमण करे छे, तेउ संसारी जीवो कहेवाय छे; ते (संसारी के०) संसारी जीवना एक (तस के०) त्रस (अ के०) वली बीजा (थावर के०) स्थावरा, ए बे प्रकार छे; तेउमांना स्थावर जीवोना पांच प्रकार छे, ते आ प्रमाणेः— एक (पुढवि के०) पृथ्वीकाय, बीजा (जल के०) पाणी ते अप्काय, त्रीजा (जलण के०) ज्वलन ते अग्निकाय, चोथा (वाउ के०) वायुकाय, पांचमा (वणस्सई के०) वनस्पतिकाय, ते एवी रीतें (था

वरा के०) स्थावर जीवो (नेआ के०) जाणवा ॥ २॥

हवे ए स्थावर जीवोना नेदमां अनुक्रमें प्राप्त थएला पृथ्वीकाय जीवोना नेद कहे ले:—

फलिह मणि रयण विद्दुम, हिंगुल ह
रियाल मणसिल रसिंदा ॥ कणगाइ
धाउ सेढी, वन्नि अ अरणेट्टय पलेवा
॥ ३ ॥ अप्नय तूरी ऊसं, मट्टी पाहा
ण जाइउ णेगा ॥ सोवीरं जण लू,
णाइ पुढविन्नेआइ इच्चाई ॥ ४ ॥

अर्थः—(फलिह के०) स्फटिक प्रसिद्ध ले, (मणि के०) मणि ते चंद्र कांतादिक अथवा जे समुद्रमां उत्पन्न थाय ले ते, तथा (रयण के०) रत्न ते वज्र कर्केतनादिक अथवा जे खाणमां उत्पन्न थाय ले ते, (विद्दुम के०) परवालां अथवा विद्रुम; (हिंगुल के०) हिंगलो, (हरियाल के०) हडताल, (मणसिल के०) मणसील, (रसिंदा के०) पारो अथवा रसेंद्र; (कणगाइ धाउ के०) कनकादि धातु सात ले:— सोनुं, रूपुं, त्रांबुं, कथीर, जसत, शीसुं, तथा लोहोढुं; ए अग्निसंयो

गना अनावें पृथ्वीकाय छे अने अग्निसंयोगें तेऊका
य छे. (सेढी के०) खडी माटी अथवा चाक कहे
वाय छे ते, (वन्नि के०) हरमजी अथवा लाल रं
गनी माटी थाय छे ते, (अरणोट्टय के०) पाषाण
ना कटकानी साथें मलेली धोली माटी थाय छे ते
तथा (पलेवा के०) एक जातिनो पाषाण छे
॥ ३ ॥ (अब्भय के०) पांच वर्णनो अबरख, ते
सोनी लोकोने सोनुं तपाववाना उपयोगमां आवे छे
अथवा वैद्य लोको एनी भस्म वगेरे करीने औषधि
मां वापरवाने कामें लगाडे छे; (तूरी के०) एक
जातिनी माटी छे, ते कापडने पास देवाना काममां
आवे छे; (ऊसं के०) ए पण एक जातिनी माटीज
छे, पण क्षार भूमिमां उत्पन्न थयाथी क्षार अथवा
खारो ए नामें ओलखाय छे, एवी रीतें (मट्टी के०)
माटी अने (पाहाण के०) पाषाण, ए बे पदार्थो
नी काली, नीली, राती, पीली अने धोली एवी
(जाइउणेगा के०) अनेक जातीयो छे ते बधी
तथा (सोवीरंजण के०) ए सुरमो एवे नामें ओलखा
य छे ते आंखमां अंजाय छे. (लूणाइ के०) सैंधव,
साजी, बिडलवण, काचलवण, तथा समुद्रलवण,

(इच्चाई के०) इत्यादि, (पुढविन्नेआइ के०) पृथिवी कायसंसारी जीवोना नेद कहेवाय ले ॥ ४ ॥

हवे बादर अप्काय जीवोनुं वर्णन करे ले:–

नोमं तरिक्ख मुदगं, उसा हिम करग
हरितणू महिआ ॥ हुंति घणोदहि
माई, नेआणेगा य आउस्स ॥ ५ ॥

अर्थः–(नोमं के०) कूपादिनुं पृथवीमां रहेलुं, तथा शिरोपानीय, ए बधुं नूमिजल कहेवाय ले; (अंतरिक्खमुदगं के०) सरोवरादिकनेविषे जे मेघनुं पाणी नराय ले, ते अंतरिक्ष उदक कहेवाय ले. (उसा (के०) उसनुं पाणी, ए तुषार अथवा फाकल पण कहेवाय ले; (हिम के०) हिम पड्याथी जे बंधाई जाय ले ते पाणी, (करग के०) वर्षाऋतुमां मेघ पडतां वायुना योगें पाणी बंधाई कठिण थईने धोला पाषाणना कटका जेवा पृथिवी उपर पडे ले, ते करा अथवा करक कहेवाय ले. (हरितणू के०) उगेला घास प्रमुख वनस्पतिना मोर अथवा माज प्रमुखनां पांदडाने ले़डे जे पाणीना बिंडु थाय ले ते हरितनु कहेवाय ले, (महिआ के०) आकाशनेविषे कोई समयें

वादळां थई आवे छे तेना योगें अतिसूक्ष्म जीणी जीणी पाणीनी बूंदो पडे छे, ते महिका अथवा धूमरीनुं पाणी कहेवाय छे, एवी रीतें (आउस्स के०) अप्कायना (घणोदहिमाई के०) जेने आधारें पृथिवी रही छे ते घनोदधिआदि देइने बीजा पण (नेआणेगा के०) अनेक नेदो (हुंति के०) थाय छे, ए अप्काय जीवोना नेद कह्या ॥ ५ ॥

हवे तेउकाय जीवोना नेद कहे छेः—

इंगाल जाल मुम्मुर, उक्का सणि कण
ग विज्जुमाईआ ॥ अगणि जिआणं
नेआ, नायव्वा निउणबुद्धीए ॥ ६ ॥

अर्थः— (इंगाल के०) ज्वाला विनानो अग्नि, काष्ठ प्रमुख वस्तुनुं सत्त्व ज्यारें बळी जाय छे, त्यारें अग्निनी ज्वालानो नाश थई जाय छे, अने रक्त रत्ननी पठें चळकित ककडा थई रहे छे, ते अंगार कहेवाय छे; (जाल के०) ज्वालानो अग्नि (मुम्मुर के०) अग्निनी ज्वालामांथी जे सूक्ष्म कण निकळे छे ते न्रासहि अथवा न्रासडा कहेवाय छे; (उक्का के०) कोइक काळने विषे आकाशमांथी अग्निनी वृष्टि थाय छे, अथवा

नक्षत्रो पडे छें ते उल्कापात कहेवाय छे, (असणी के०) वज्रनो मार मारतां तेमांथी अग्नि पडे छे ते अशनि कहेवाय छे, (कणग के०) कोइक कालनेविषे आकाशमां अग्निना तणखा ऊडता देखाय छे ते कनक एटले कणीआनो अग्नि कहेवाय छे. (विज्जुमाईआ के०) विजली आदिक ते वर्षाऋतु प्रमुख कोइ पण ऋतुमां ज्यारें मावठुं थाय छे, त्यारें कोई वखतें आकाशथी विजली पृथिवी उपर पडे छे,ते विद्युत्पात कहेवाय छे. इत्यादिक (अगणिजिआणं के०) अग्निकायसंसारी जीवोना (नेआ के०) नेदो ते (निउणबुद्धीए के०) निपुण एटले सूक्ष्म बुद्धिएं करी (नायव्वा के०) जाणवा योग्य छे ॥ ६ ॥

हवे वायुकाय जीवोना नेद कहे छेः—

उब्जामग उक्कलिआ, मंमलि मुहसु
द्ध गुंजवाया य॥ घणतणु वायाईया,
नेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥

अर्थः—(उब्जामग के०) आकाशनेविषे जे वायु तृणादिकना छेडाने नमावे छे,ते उद्भामक वायरो कहेवाय छे; (उक्कलिआ के०) जे वायु, रही रहीनें वा

तो होय ते उत्कलिक वायु कहेवाय छे. (मंमलि के०) ए विंटोलिउ अथवा मंमलिक वायु कहेवाय छे. (मुहसुद्ध के०) मुखमांथी फूंक दीधाथी जे वायु नी कले छे ते मुखशुद्ध वायु कहेवाय छे, (गुंजवायाय के०) जे गुंजारव करे. ते गुंजवायु कहेवाय छे, (घणतणु के०) जे बे वायुने आधारें नरक रहेलां छे, ते एक घनवायु बीजो तनवायु कहेवाय छे, एवी रीतें ए (खलु के०) निश्चयें करी (वायाईया के०) वातादिक (वाउकायस्स के०) वायुकाय संसारी जीवोना (नेया के०) नेदो जाणवा. एवी रीतें छ गाथायें करी पृथिवी, अप्, तेज तथा वायुकाय ना नेद कह्या ॥ ७ ॥

हवे वनस्पतिकायना नेद कहे छेः—

साहारण पत्तेआ, वणसइ जीवा छु
हा सुए नणिआ ॥ जेसिमणंताणं
तणु, एगा साहारणा तेक ॥ ८ ॥

अर्थः— (वणसइ जीवा के०) वनस्पतिकाय जीवो ते एक (साहारण के०) साधारण अने बीजा (पत्तेआ के०) प्रत्येक. ए (छुहा के०) बे प्रकारना

(सुए के०) सिद्धांतोने विषे (जणिआ के०) कहेला छे. तेउमां (जेसिमणंताणं के०) जे अनंत जीवोनुं (तणु एगा के०) एक शरीर होय (तेऊ के०) तेउ (साहारणा के०) साधारण वनस्पतिकाय जीवो जाणवा ॥ ७ ॥

हवे बे गाथाएं करी ए साधारण वनस्पतिकाय जीवोना जेद कहे छेः—

कंदा अंकुर किसलय, पणगा सेवाल
जूमिफोडा अ ॥ अल्लय तिय गज्जर
मो, छ वहुला थेग पल्लंका ॥ ए ॥
कोमल फलं च सव्वं, गूढसिराइ सिणा
इ पत्ताइं ॥ थोहरि कुँआरि गुग्गुलि,
गलो य पमुहाइ छिन्नरुहा ॥ १० ॥

अर्थः— (कंदा के०) सूरणादि सर्व जातनां कंद, (अंकुर के०) बाहेर नीकलेला अंकुर (किसलय के०) सर्वे जातिनां कुपलना नवा टसा फूटे ते पातरां जाणवां (पणगा सेवाल के०) पांच वर्णनी सेवाल जे पाणीनी उपर रंग रंगनी फूलिउ थाय छे ते, (जूमि फोडा के०) वर्षाकालमां छत्रना आकारें पृथ्वीमांथी

नीकले छे ते. (अ के०) वली (अल्लयतिय के०) आईक त्रिक एटले लीलुं आदूं, लीली हलदर, तथा लीलो कचूरो. (गज्जर के०) गाजर, (मोत्थ के०) मोथ (वथुला के०) वथुला नामें शाकविशेष, (थेग के०) थामुरा, थेगी, (पल्लंका के०) पलंक ए नामनुं शाकविशेष छे एने लोको पालखुं कहे छे ॥ ए ॥ (च के०) वली (कोमल फलं सव्वं के०) सर्व कोमल फल एटले जेमां बीज थयां न होय ते, (गूढसिराइं के०) जेनो कणशलो अथवा पोंक छानो होय, एटले जेना कण पाधरा देखाता न होय, अथवा जेनी नसो के सांध्यो स्पष्ट देखाती न होय त्यां सूधी ते अनंतकाय जाणवा (सिणाइपत्ताइं के०) सणादिकनां पातरां आदि शब्दें करी जारनां पातरां पण लेवां. (थोहरि के०) थोहरनी सर्व जाति, एमां कांटालो तथा खुरसाणी पण जाणवो. (कुँआरि के०) कुंआरि थाय छे तेलोकमां प्रसिद्ध छे, एने घरमां वंची टांगी होय तो पण सूकाती नथी किंतु नवा मोर नीकलता जाय छे. (गुग्गुलि के०) गूगल प्रसिद्ध छे. (गलोयपमुहा के०) गडूची प्रमुख एने गडू पण कहे छे, ए वल्लीने आकारें थाय छे, ए ज्वरादिक मटाडवानी औषधिविशेष छे. (आइ

के०) ए आदें देइने सर्व जे (छिन्नरुहा) छेद्यां थ कां पण वाव्याथी फरीने उगे, ते सर्व साधारण वनस्पति अथवा अनंतकाय कहीयें ॥ १० ॥

इच्चाइणो अणेगे, हवंति नेया अणंत
कायाणं ॥ तेसिं परिजाणणहं, ल
क्खणमेयं सुए नणियं ॥ ११ ॥

अर्थः—(इच्चाइणो के०) इत्यादिक (अणंतकायाणं के०) अनंतकाय जीवोना पिंम, कचूर तथा गिरि कर्णिकादिक (अणेगे के०) अनेक (नेया के०) नेदो (हवंति के०) होय छे; (तेसिं के०) ते अनंतकाय जीवोनें (परिजाणणहं के०) सारी रीतें जाणवाने अर्थें (एयं के०) आ वक्ष्यमाण एटले जे आगल केहेशे ते (लक्खणं के०) लक्षणो (सुए के०) सूत्रोनेविषे (नणिय के०) कह्यां छे ॥ ११ ॥

हवे अनंतकाय वनस्पतिजीवोनां लक्षणकही बतावेछे.

गूढ सिर संधि पवं, समनंग महीरुगं च छिन्नरुहं ॥ साहारणं सरीरं,
तव्विवरीअं च पत्तेयं ॥ १२ ॥

अर्थः-(सिर के०) कणसलां प्रमुख शिर, (संधि के०) सांधाउं अथवा नसो; (पव्व के०) पर्व अथवा गांठो; ए त्रणे जे जाडनां (गूढ के०) गुप्त ठानां होय,ए टले दीठामां न आवतां होय अने (समभंग के०) भां ग्याथी जेनां सरखां बे फाडीयां थई शकतां होय (अ हिरुगं के०) तंतु रहित जेमां तांतणा होय नही; (च के०) पुनः एटले वली (छिन्नरुहं के०) जे छेदीने फरी वावीएं तो ऊगे; ए सर्व प्रकारना वृक्षोने (साहारणं सरीरं के०) साधारण वनस्पति कायनां शरीर कहियें; अने एज अनंतकाय पण कहेवाय छे. (तव्विवरीअं के०) ते थकी विपरीत लक्षण वाली वनस्पतिने (प त्तेयं के०) प्रत्येक वनस्पतिकाय कहियें ॥ १२ ॥

हवे ते प्रत्येक वनस्पतिकाय दर्शावे छेः-

एग सरीरे एगो, जीवो जेसिं तु ते
य पत्तेया ॥ फल फूल छल्लि कठा,
मूलग पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥

अर्थः-(एग सरीरे के०) एक शरीरनेविषे (एगो जीवो के०) एक जीव (जेसिं तु के०) जे वृक्षने विषे होय (तेयपत्तेया के०) तेने प्रत्येक वनस्पति

काय कहियें. ए प्रत्येक वनस्पतिकायना सात प्रकार छे ते आ प्रमाणेः–(फल के०) सर्वप्रकारनां फल, (फूल के०) सर्वप्रकारनां फूलो; (छल्लि के०) ऊप रनी त्वचा अथवा छाल; (कठ्ठा के०) सर्व प्रकारनुं काष्ठ अथवा लाकडुं (मूलग के०) जुइ तलीयानुं थ ड; (पत्ताणि के०) सर्व जातिनां पांदडां, (बीयाणि के०) सर्व बीज; ए साते स्थानक प्रत्येक भिन्न भिन्न जीवरूप होवाथी एउने प्रत्येक वनस्पतिकाय कहियें. एवी रीतें ए बादर पृथिव्यादिक पांच थावरना भेद कह्या ॥ १३ ॥

हवे पांच स्थावर सूक्ष्मनुं वर्णन करे छेः–

पत्तेयं तरु मुत्तं, पंचवि पुढवाइणो सयल लोए ॥ सुहमा हवंति नियमा, अंत मुहुत्ताउ अद्दिस्सा ॥ १४ ॥

अर्थः–(पत्तेयंतरु मुत्तं के०) ए पूर्वोक्त प्रत्येक वनस्पतिकाय मूकीने (पंचवि पुढवाइणो के०) पांचे पृथिव्यादिक (सयल लोए के०) सकल चौद राजलोकनेविषे (सुहमा के०) सूक्ष्म (हवंति के०) होय छे. (नियमा के०) निश्चय करी. एने पंच स्थावर कहियें. ते (अंतमु

हुत्ताउ के०) अंतरमुहूर्त्तना आयुष्यवाला होय ले अने (अदिस्सा के०) अदृश्य होय ले एटले चर्मदृष्टिएं दे खाय नही. तेथीज ए सूक्ष्म कहेवाय ले ॥ १४ ॥

ए पांच स्थावर सूक्ष्म अने पांच बादर मलीने द श नेद थया. अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ते बादरज होय ले, पण सूक्ष्म होय नही. तेथी प्रत्येक वनस्पति कायनो एक जुदोज नेद होवाथी सर्व अग्यार नेद थाय ले. ते अग्यार पर्याप्ता तथा अग्यार अपर्याप्ता मलीने बावीश नेद स्थावर संसारी जीवना कह्या ले अने बीजा संसारी त्रस कहेवाय ले, तेना मूल चार नेद ले ते आः—बेंडी, तेंडी, चौरिंडी तथा पंचेंडी; ते उमांना प्रथम बेंडी त्रस जीवना नेद कहे लेः—

संख कवड्डय गँमुल, जलोय चंदण
ग अलस लहगाई ॥ मेहरि किमि
पूअरगा, बे इंदिय माई वाहाई॥१५॥

अर्थः—(संख के०) दक्षिणावर्त्त प्रमुख मोटा त था नाना शंख होय ले ते; (कवड्डय के०) कपर्दक अथवा कोमीउ अने कोमा थाय ले ते; (गंमुल के०) गंमोला एने गगुता कहे ले, ए उदरमां महोटा क्रमि

या उत्पन्न थाय छे ते, (जलोय के०) जलो ए श रीरनी ऊपर फोडा वगेरे आव्या होय त्यारें तेनी ऊ पर मूक्याथी ते जग्यानुं रक्त शोषण करी लिये छे ते, (चंदणग के०) एने सिद्धांतोमां अक्ष एवा नामथी प्रतिपादन कर्युं छें, एने आरिया पण कहे छे, ते सा धु स्थापनामां राखे छे; (अलस के०) वर्षाकालमां वृष्टि थाय छे ते वखतें पृथिवीमांथी सर्पना आकारें लाल रंगवाला जे अति पातला जीवो उत्पन्न थाय छे,ते ज्यां सुधी वर्षात थतो होय त्यां सुधी ज्यां त्यां घणा फरता दीठामां आवे छे, ज्यारें वर्षात रही जा य छे,ने तडको पडे छे त्यारें तेउमांनो एक पण दीठामां आवतो नथी. एने भूनाग अथवा अलसियां पण क हे छे. (लहगाई के०) रोटली प्रमुख पकावेलुं अन्न वासी रही गयाथी केटलाएक कालें तेमां जे जीव प डे छे, तेने लालिया कहे छे. (मेहरि के०) काष्ठमां जे कीडा थाय छे ते; (किमि के०) ए पण एकजात ना कीडा होय छे, ते उदरमां उत्पन्न थाय छे; जेवा के, गुदप्रदेशनेविषे हरसा थाय छे,तथा गुंबडा वगेरेना क्षतनेविषे जे कीडा थाय छे तेने कृमि कहे छे. (पूअ रगा के०) ए जीव पाणीमां उत्पन्न थाय छे, ए जी

वोनो वर्ण रातो होय ठे अने मुख कालुं होय ठे. एने कच्छी नाषामां पूअरा कहे ठे. अने (माइवाहाई के०) मातृवाहादिक एने चुडेल पण कहे ठे, मूल मां आदि शब्द पड्यो ठे तेथी मनुष्यना अंगमां जे वाला थाय ठे ते पण लेवा, इत्यादिक (वेइंदिय के०) बेंद्रिय जीव जाणी लेवा, ए जलमां तथा स्थलमां उत्पन्न थाय ठे. ते अनेक प्रकारना ठे एउने स्पर्शेन्द्रिय तथा रसनेंद्रिय ए वे इंद्रियो होय ठे ॥ १५ ॥

हवे बे गाथावडे तेंडी जीवोना नेद कहे ठेः—

गोमि मंकण जूआ, पिपीलि उद्देहिया
य मक्कोडा ॥ इल्लिय घयमिल्लीउ, सावय
गोकीड जाईउ॥१६॥ गद्दहय चोरकीडा,
गोमयकीडा य धन्नकीडा य ॥ कुंथु गुवा
लिय इलिया, तेइंदिय इंदगोवाई ॥१७॥

अर्थः—(गोमी के०) कानखजूरिआ, एना पग घणा होय ठे, ने ए कानमां पेशी जईने माणसने घणी इजा करे ठे, एम कहेवाय ठे. (मंकण के०) माणसना सूवाना बिठानामां अथवा खाटला प्रमुखनी नवारमां. जे जीवो उत्पन्न थाय ठे तेने मांकड कहे ठे,

(जूआ के०) यूका, ए जीवो माणसना माथाना वा लमां उत्पन्न थाय छे, अथवा माणसना कपडामां उत्पन्न थाय छे, एटले ए माणसना शरीरना मेलमां थी उत्पन्न थाय छे. एने कच्छी तथा गुजराती जाषामां जीख कहे छे, ते संस्कृत लिक्ष शब्दनो अपभ्रंश छे. (पिपीलि के०) एने पिपीलिका, कहे छे, एनी राती काली एवी घणी जाति होय छे, ते लोकमां प्रसिद्ध छे. (उद्देहिया के०) उद्देहिका, एने वाल्मिक जीवपण कहे छे. ए जीवो वृक्षमां,काष्ठमां के गृहमां ज्यां ज्यां प्रवेश करे छे त्यां त्यां पोतानुं शरीर रहेवा पूरतुं घर बनावीने तेमांथी ते वृक्षादिकने खाती खाती चाली जाय छे. (य के०) वली (मक्कोडा के०) मत्कोटि का, ए जीव घणुं करीने बावलना जाडना थडमां उत्पन्न थाय छे, अथवा गोल प्रमुख मिष्ट पदार्थ ज्यां होय त्यां थाय छे. (इल्लिया के०) ए जीव धा न्यादिकमां उत्पन्न थाय छे एने ईल पण कहे छे. (घ यमिल्लीउ के०) ए जीव घृतमां उत्पन्न थाय छे,एने घी मेल पण कहे छे. (सावय के०) ए जीव मनुष्यना श रीरना माथा शिवाय बीजा सर्व अवयवमांना केशोना थडमां उत्पन्न थाय छे. तेमां पण विशेषें करी आंखो

नीपांपणमां थाय छे. ते जे वखतें मनुष्यना शरीरमां उत्पन्न थाय छे ते वखतें नविष्यकालविषे एवुं अनुमान थाय छे के कांइ पण कष्ट प्राप्त थशे. एने लोक सावा कहे छे. (गोकीडजाईउ के०) गोकीटक जाति, ए जीव गाईप्रमुख पशुना शरीरना अवयोमां उत्पन्न थाय छे,ते तेउनी त्वचामां चोटी रहेला होय छे एने कच्छी नाषामां चिच्चडी अथवा गोगीडा पण कहे छे ॥ १६ ॥ (गद्दहय के०) ए जीव गकशाला प्रमुखमां उत्पन्न थाय छे एउनो वर्ण श्वेत होय छे,एउने शास्त्रोमां उत्तिगा पण कहे छे. (चोरकीडा के०) ए जीव विष्टामां उत्पन्न थाय छे. (गोमयकीडा के०) ए जीव गणमां उत्पन्न थाय छे. (धन्नकीडा के०) ए जीव धान्यमां उत्पन्न थाय छे, ते लोकमां धनेरियां एवे नामें उलखाय छे. (य के०) वली (कुंथु के०) ए जीव सूक्ष्म उतां पांच रंगना थाय छे, एने कुंथुआ पण कहे छे. (गोवालिय के०) गोपालिक, ए एक जातिना ए वाज जीव थाय छे, ते अप्रसिद्ध छे. (इलिया के०) इलिका, ए जीव खांम अथवा चोखामां उत्पन्न थाय छे. (इंदगोवाइ के०) इंड्गोपादि, ए जीव वर्षाऋतुमां वर्षात् पडे त्यारें उत्पन्न थाय छे, एनो अत्यंत रक्तवर्ण

होय छे, एने लोकमां मेहना मामा पण कहे छे. इत्यादिक (तेइंदिय के०) त्रींद्रिय जीवो बीजा पण घणा छे ते सर्व जाणी लेवा. ए त्रींद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय अने रसनेंद्रिय तथा घ्राणेंद्रिय ए त्रण इंद्रियो होय छे. एम ए तेंद्रिय जीवना भेद कह्या ॥ १७ ॥

हवे चतुरिंद्रिय जीवोना भेद कहे छेः–

चउरिंदिया य विछू, ढिंकुण भमरा य
भमरिया तिड्डा ॥ मछिय डंसा मसगा,
कंसारी कविल डोलाई ॥ १८ ॥

अर्थः–(चउरिंदिया के०) चतुरिंद्रिय जीवो आ छेः–(विछू के०) विछू ए जातना जहेरी जीवो थाय छे, तेना पूंछडामां एक कांटो होय छे, तेना मारथी माणसने विष चडे छे, ते एज नामें लोकमां प्रसिद्ध छे. (ढिंकुण के०) ए जीवो कांइक मक्षिकानें मलता होय छे, ते घोडाना तबेला प्रमुखने ठेकाणे उत्पन्न थाय छे, तेने लोकमां बगाई कहे छे (भमरा के०) ए जीवो काला वर्णना होय छे, अने ते घणुं करीने ज्यां सुगंधिक पुष्पोनां वृक्षो होय छे त्यां रहे छे, ए जीवोने पुष्पोनो सुगंध घणो प्रिय होय छे. ए भ्रमर एवे नामें लोक

मां प्रसिद्ध छे. (चमरिया के०) चमरिका, ए जीवो पीतादिक घणा रंगवाला होय छे, तेमज विविध आकारवाला होय छे. (तिड्डा के०) ए जीवो वर्षाऋतुना अवसानमां जे वखतें धान्यना वृक्ष पाकी रहेला होय छे, ते वखतें आकाशमार्गें अगणित संख्याबद्ध उडता आवीने कोई धान्यना क्षेत्र वगेरे ऊपर पडे छे, ते जेटली जगामां आवी पडे छे, तेटली जगानां झाड पान वगेरे खाईने सफा करी नाखे छे, ते तीड एवे नामें लोकमां प्रसिद्ध छे. (मच्छिय के०) मक्षिका, ए जीवो लोकमां अति प्रसिद्ध छे, ए माखी एवा नामें ओलखाय छे; उपलक्षणथी मधुमक्षिका पण जाणी लेवी. (डंसा के०) डांसा ए जीवो सिंधुदेशमां प्रसिद्ध छे. ए घणुं करीने वर्षाकालमां चीकडनी जमिनमां उत्पन्न थाय छे, (मसगा के०) मसक, ए जीवो लोकमां मच्छर एवे नामें ओलखाय छे, ए लोकमां प्रसिद्ध छे, (कंसारी के०) ए जीवो घणुं करीने ओसाड घर प्रमुखने ठेकाणे उत्पन्न थाय छे, ते लोकमां प्रसिद्ध छे, (कविलडोल के०) ए जीवो तीडनी जेवाज एक जातिना थाय छे, तेने लोकमां खडमांकडी कहे छे, ए लोकमां बहु प्रसिद्ध नथी, (आइ के०)

आदि शब्दथकी पतंग तथा ढिंढण प्रमुख बीजा जे चउरिंड्रिय जीवो होय ते सर्व जाणी लेवा, ए जीवने स्पर्शनेंड्रिय, रसनेंड्रिय, घ्राणेंड्रिय, तथा नेत्रेंड्रिय ए चार इंड्रियो होय ले ॥ १० ॥

हवे पंचेंड्रिय जीवोना नेद कहे ले:-

पंचिंदिया य चउहा, नारय तिरि
या मणुस्स देवा य॥ नेरइया सत्त
विहा, नायवा पुढविन्नेएणं ॥ १ए ॥

अर्थः-(पंचिंदिया के०) जेने स्पर्शनेंड्रिय, रस नेंड्रिय घ्राणेंड्रिय, चक्षुरिंड्रिय, तथा श्रोत्रेंड्रिय ए पांच इंड्रियो होय ते पंचेंड्रिय जीव कहेवाय ले, ते "च" समुच्चयार्थमां ले (चउहा के०) चार प्रकारना ले. एक (नारय के०) नारकी, बीजा (तिरिया के०) तिर्यंच, त्रीजा (मणुस्स के०) मनुष्य, चोथा (देवा के०) देवता; तेउमां प्रथम (नेरइया के०) नारकी जीव ते (पुढविन्नेएणं के०) रत्नप्रनादि पृथ्वीना नेदें करी (सत्त विहा के०) सात प्रकारना (नायवा के०) जाणी लेवा. ते सात पृथ्वीउनां नाम कहे ले:-रत्नप्रना, शर्कराप्रना, वालुकाप्रना, पंकप्रना, धूमप्रना, तमःप्रना,

तथा तमस्तमप्रना, ए सात ठेकाणें उत्पन्न थएला जीवोने नारकी कहियें. तथा बीजां नाम कहे छे. घमा, वंशा, सेला, अंजण, रिठा, मघा, तथा माघवती, ए नाम पण छे ए सात प्रकारने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ताना नेदें गणतां चौद नेद नारकी जीवोना थाय छे.

हवे पंचेंद्रिय तिर्यंचना नेद कहे छेः—

जलयर थलयर खयरा, तिविहा पंचेंदिया तिरिरका य ॥ सुसुमार मछ कछव, गाहा मगराइ जलचारी ॥ २० ॥

अर्थः— (तिरिरका पंचेंदिया तिविहा के०) तिर्यंचपंचेंद्रिय त्रण प्रकारना छे, ते आः— एक (जलयर के०) जलचर एटले जे जीवो पाणीमां उत्पन्न थाय, पाणीमां रहे, तथा पाणीमांज नाश पामे; ते जलचर जीव जाणवा. बीजा (थलयर के०) स्थलचर एटले जे जीवोनी उत्पत्ति, स्थिति तथा नाशनो संनव जलचरोनी परें पृथ्वि ऊपर होय ते; तथा त्रीजा (खयरा के०) खेचर एटले जे जीवोनी चालवानी स्थिति आकाशने विषे होय ते जाणवा; तेउमां प्रथम जलचर जीवना मुख्य पांच नेद छे ते आ

प्रमाणेः— एक (सुसुमार के०) पाम्ताना जेवा म त्स्य होय छे; ते घणुं करी मीठा पाणीना तलाव प्र मुखमां दीठामां आवे छे; बीजा (मछ के०) नाना प्रकारना जे बीजां माछलां दीठामां आवे छे ते; ए जातिना जीवो घणुं करी खारा समुद्रमांहे विशेष दी ठामां आवे छे; त्रीजा (कछव के०) कछप ए जीवो घ णुं करी मीठा पाणीना तलाव अथवा खोदेला कूवा ना पाणीमां दीठामां आवे छे, एनी त्वचा घणी कठि ण होय छे ने तेमांथी ढाल एवा नामनो हथीयार देह रक्षणार्थ लोक करे छे, ए जीवने लोकमां काचबाना नामें उलखे छे; चोथा (गाहा के०) ए जीवो समुद्रमां तेमज मीठा पाणीना तलाव प्रमुखमां पण थाय छे; ए जीव तंतु आकारें होय छे,ने अति बलवान् होय छे; पाणीमां एनुं एटलुं जोर होय छे के, ते हाथीने पण घसडी जाय छे; एने लोकमां फूड एवे नामें उलखे छे; (मगर के०) मकर, ए जीव समुद्रमां होय छे, एनुं श रीर अति विशाल होय छे,ए लोक मां मगरमत्स्य एवे नामें उलखाय छे; ए (आइ के०) आदिशब्दें करी बीजा पण (जलचारी के०) जलचर जीव घणा प्रकारना छे. ए जलचर पंचेंद्री तिर्यंच जीवना भेद कह्या ॥ २० ॥

हवे स्थलचर जीवोना भेद कहे छेः-

चउपय उरपरिसप्पा, भुयपरिसप्पा य
थलयरा तिविहा ॥ गो सप्प नउल
पमुहा, बोधव्वा ते समासेणं ॥ २१ ॥

अर्थः-(थलयरा तिविहा के०) स्थलचर जीवो त्रण प्रकारना छे; ते आः-एक (चउपय के०) चतुष्पद एटले चार पगवाला सर्व प्रकारना पशुउ जाणी लेवा; बीजा (उरपरिसप्पा के०) उरपरिसर्प्प ए जीवो उदरथी चाले छे. एनी नाग प्रमुख घणी जाति होय छे, एमां केटलाएक जीवो विषरहित होय छे, ने केटलाएक विषसहित होय छे; ते लोकमां प्रसिद्ध छे, (य के०) वली त्रीजा (भुयपरिसप्पा के०) भुजपरिसर्प ए जीवो भुजावडे चाले छे. ते नोलिया प्रमुख जाणी लेवा. ए उपर कह्या जे त्रण प्रकारना स्थलचर जीवो तेउ अनुक्रमें (गो के०) गाईप्रमुख ते चतुष्पद, (सप्प के०) सर्पप्रमुख ते उरःपरिसर्प्प तथा (नउलपमुहा के०) नोलियाप्रमुख ते भुजपरिसर्प ए (समासेणं के०) संक्षेपमात्रें करी (बोधव्वा के०) जाणी लेवा. ए स्थलचर जीवोना भेद कह्या ॥ २१ ॥

हवे खेचर जीवोना नेद कहे छेः—

खयरा रोमयपरको, चम्मयपरको
य पायडा चेव ॥ नरलोगाउ बाहिं,
समुग्गपरकी वियय परकी ॥ २२ ॥

अर्थः— (खयरा के०) खेचर जीवो ते आकाश नेविषे विचरनारा जे पक्षीउ ते बे प्रकारना छेः—एक (रोमयपरकी के०) रोमज पक्षीउ,एटले जेउना पक्षो रोमसंयुक्त होय छे, जेवा के शुक, हंस, तथा सार सादिक पक्षीउ तेमज पारेवां, कागडा, चकलां,पोपट प्रमुख एनी पांख मोवालानी होय छे, ते (य के०) बीजा (चम्मयपरकी के०) चर्मजपक्षीनो (पायडा के०) प्रगट अर्थ छे एटले जेउनी पांखो चामडाना जेवी होय छे तेने चर्मपंखी कहीयें. जेवा के, चामाचीडिया अथवा चर्मचीटिका, तथा वडवागुल अथवा वल्गुली प्रमुख ए (चेव के०) निश्चें लोकमां प्रसिद्ध छे. अने (नरलोगाउ बाहिं के०) मनुष्य लोकनी बाहेर (समुग्गपरकी के०) समुज पक्षीउ, तथा (विययपरकी के०) वितत परकीउ होय छे. मनुष्य लोकनुं प्रमाण शास्त्रोमां आवी रीतें कह्युं छेः—जंबुद्वीप, धातकीखंम, तथा

पुष्कर वर द्वीपना अर्द्ध नाग सुधी मनुष्योनी वस्ती छे एटले ए अढी द्वीपोमां मनुष्यो छे ए अढी द्वीपोमां ना प्रथम जंबुद्वीपने चोफेर खाइनी पेठें लवण समुद्र वींटी रह्यो छे, अने बीजा धातकी खंडने, कालो दधि वींटी रह्यो छे अने बधानी चोफेर स्वर्णमय मानुष्योत्तर पर्वत किल्लानी पठें वेष्टित थइ रहेलो छे. ए नर लोकक्षेत्रनुं प्रमाण एकंदर पिस्तालीश लाख योजननुं कह्युं छे. इहांज मनुष्योनां जन्म तथा मरणनो संनव होवाथी ए मनुष्य लोक कहेवाय छे; तेथी बाहेर उपर कहेला बें जातिना पक्षीउ होय छे, तेमां समुद्गवत् पक्षीउनी पांख बेसती वखतें संकोचने पामे छे, अने विततपक्षीयोनी पांख सदा सर्वदा विस्तारेलीज होय छे. ए सर्व खेचर जीवो जाणवा ॥ २२ ॥

हवे उपर त्रण प्रकारना जे तिर्यंच जीवो कह्या. ते एकेकना वली बे बे नेद बीजी रीतें कहे छेः—

सव्वे जल थल खयरा, संमुच्छिमा गप्न
या डहा हुंति ॥ कम्माकम्मग नूमि,
अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥

अर्थः— ए उपर कहेला (सव्वे के०) सर्व प्रकारना

(जल थल खयरा के०) जलचर स्थलचर, तथा खेचर जीवो ते (संमुछिमा के०) एक संमूर्छिम अने बीजा (गप्नया के०) गर्भज ए (डुहा के०) द्विधा एटले बे प्रकारना (हुंति के०) छे. एम प्रत्येकना बब्बे प्रकार हो वाथी छ भेद थया. जे जीवो माता पितानी अपेक्षा विना उत्पन्न थाय ते संमूर्छिम कहेवाय छे. अने जे जीवो गर्भमां उत्पन्न थाय ते गर्भज कहेवाय छे. तिहां एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय तथा चतुरिंद्रिय सर्व ए जीवो संमूर्छिमज होय छे. ए तिर्यंचना सर्व मली अडतालीश भेद थाय छे ते आवी रीतेंः—प्रथम एकेंद्रिय जीव बधा थावर कहेवाय छे तेना बावीश भेद आगल चौदमी गाथाना अर्थमां दर्शाव्या छे. अने बीजा त्रस जीव ना मूल बेंद्री, तेंद्री, चौरिंद्री अने पंचेंद्री ए चार भेद छे तेमां बेंद्री. तेंद्री, तथा चौरिंद्री ए त्रण विकलेंद्रीने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणतां छ भेद थाय ते पूर्वोक्त बावीश साथें मेलवतां अठावीश भेद थया.

हवे पंचेंद्री तिर्यंचना वीश भेद छे ते देखाडे छे. जलचर, थलचर, खेचर, उरःपरिसर्प अने भुजपरिसर्प, ए मूल पांच भेद संमूर्छिमना अने पांच गर्भजना मली दश भेद थाय. ते दश पर्याप्ता अने दश अप

थईश मळी वीश नेद थया, तेने पूर्वोक्त अठावीश साथें मेळवतां अडतालीश नेद तिर्यंचना थाय. ए रीतें गाथाना पूर्वार्द्धमां पंचेंडी तिर्यंचनुं वर्णन कर्युं.

हवे गाथाना उत्तरार्द्धमां पंचेंडी मनुष्यना नेद कहे छेः—(कम्माकम्मग नूमि के०) कर्म नूमिमां उत्पन्न थएला, अकर्मनूमिमां उत्पन्न थएला तथा (अंतर दीवा मणुस्साय के०) अंतर द्वीपमां उत्पन्न थएला ए त्रण प्रकारना मनुष्य होय छे. तेमां कृषिवाणिज्या दिक कर्मप्रधान नूमि ते कर्मनूमि कहियें, ते नूमिने विषे जे मनुष्य उत्पन्न थाय छे. ते कर्मनूमिज कहेवा य छे. ते कर्मनूमिउ अढी द्वीपमां पंदर छे. अने जे मां कृषी वाणिज्यादि कर्म नथी एवी अकर्म नूमिउ त्रीश छे, तथा अंतरद्वीप छप्पन्न छे ते आ प्रमाणेः— ए जबुंद्वीपना मध्यनागें मेरु पर्वत छे ते मेरुथी दक्षि णदिशें लवणसमुड्नें लगतो लवण समुड्नी उत्तरदिशें नरत क्षेत्र छे, ते कर्म नूमिज छे तथा ते नरतक्षेत्रनें उत्तरदिशिने छेहडे हेमवंत पर्वत छे ते पर्वत मूकी तेनी उत्तरदिशिमां हिमवंत नामें युगलीयानुं क्षेत्र छे अने वळी मेरुथकी उत्तरदिशें लवण समुड्नें लगतुं समु ड्नी दक्षिण दिशें ऐरवत क्षेत्र छे ते कर्म नूमिज छे

ते ऐरवतनी दक्षिणदिशिने छेहडे शिखरी नामा पर्वत छे, ते पर्वत मूकीनें तेनी दक्षिण दिशें एक हिरण्य वंत नामें युगलीयानुं क्षेत्र छे एटले पूर्वें कहेला एक हिमवंत अने बीजो हिरण्यवंत ए बे अकर्मभूमि क्षेत्र छें एने विषे युगलीया मनुष्य रहे छे तेहनुं सदाकालें एक गाउ देहमान अने एक पल्योपमनुं आयु छे तिहां सदा कालें त्रीजो आरो वर्त्ते छे.

तथा वली ते पूर्वोक्त हिमवंतनामें युगलीयाना क्षेत्रथी उत्तर दिशें एक महाहिमवंत पर्वत छे ते पर्वतनी उत्तरदिशें हरिवर्ष नामें युगलीयानुं क्षेत्र छे तथा पूर्वोक्त हिरण्यवंत नामें युगलीयाना क्षेत्रथी दक्षिणदिशें एक रूपी नामें पर्वत छे ते पर्वतनी, दक्षिणदिशें एक रम्यक नामें युगलीयानुं क्षेत्र छे. ए रीतें एक हरिवर्ष तथा बीजो रम्यक ए बे अकर्मभूमि क्षेत्रमां युगलीया वसे छे तेनुं सदा कालें बे गाउ देहमान अने बे पल्योपम आयु छे तिहां सदाकाल बीजो आरो वर्त्ते छे.

तथा वली हरिवर्ष नामें युगलीयाना क्षेत्रथी उत्तरदिशें मेरुनी तरफ लाल हिंगलो जेवा वर्णें निषध नामें पर्वत छे तेनी पासें एक देवकुरु नामें युगलियानुं क्षेत्र छे तथा वली मेरुथकी उत्तरदिशें जे रम्यक नामें

युगलीयानुं क्षेत्र छे तेनाथी दक्षिणदिशे नीले वरणें एक नीलवंत नामें पर्वत छे, ते पर्वतथकी दक्षिण दिशें मेरुनी पासें एक उत्तरकुरु नामें युगलियानुं क्षेत्र छे एटले एक देवकुरु अने बीजो उत्तरकुरु ए बे अकर्मभूमि क्षेत्र छे तेने विषे युगलीयां मनुष्य रहे छे तेनुं सदाकाल त्रण गाउनुं देहमान छे अने त्रण्य पल्योपमायु छे तिहां सदाकाल पहेलो आरो वर्त्ते छे.

तथा निषध अने नीलवंत ए बे पर्वतो कह्या तेनी वचालें मेरु पर्वत छे,ते मेरुनी चारेदिशि मांहेथी पूर्व दिशें पूर्व महाविदेहनां शोल विजय छे अने पश्चिम दिशें पश्चिममहाविदेहनी शोल विजय छे. ए बेहु मली बत्रीश विजयनो एक महाविदेह कर्मभूमिक्षेत्र छे.

ए रीतें प्रथम जंबुद्वीपने विषे एक हेमवंत अने हिरण्यवंत, बीजो हरिवर्ष ने रम्यक, त्रीजो देवकुरु ने उत्तर कुरु, ए त्रण जोडले मली छ क्षेत्र युगलीयां मनुष्यनां छे ते अकर्म भूमिज कहीयें,कारण के ए क्षेत्रोमां जे मनुष्य रहे छे तेने प्रायें कर्म थोडां लागे छे केम के असी मसीने कसी ए त्रण वस्तु कर्मबंधनुं कारण छे ते वस्तु ए क्षेत्रमां नथी. अने एक भरत, एक ऐरवत,तथा एक महाविदेह मली त्रण क्षेत्रकर्म भूमिज छे.

ए रीतें बीजो धातकी खंमद्वीप अने पुष्करवरनुं अर्द्ध ए दोढ द्वीपमां प्रत्येकें प्रत्येकें एक पूर्वदिशियें अने बीजो पश्चिमदिशियें मली बे बे मेरु पर्वत ले अने ज्यां एक मेरु होय तिहां एक जरत एक ऐरवत अने एक महाविदेह, ए त्रण कर्मनूमिक्षेत्र होय अने पूर्वोक्त जंबूद्वीपनी पेठें ठ युगलीयानां क्षेत्र होय, तेवारें बे जरत, बे ऐरवत, बे महाविदेह, ए ठ क्षेत्र कर्मनूमिनां अने बे हेमवंत,बे हिरण्यवंत बे हरिवर्ष,बे रम्यक, बे देवकुरु अने बे उत्तरकुरु,ए सर्व मली बार युगलीयनां क्षेत्र धातकी नामा बीजा द्वीपमां ले अने तेटलाज वली पुष्करार्द्ध नामा त्रीजा अर्द्ध द्वीपमां पण ले. केम के ए बेहु द्वीपमां प्रत्येकें बे बे मेरु ले.

ए रीतें ए अढीद्वीपनां क्षेत्रने एकठां करीयें तेवारें त्रीश क्षेत्र अकर्मनूमिनां अने पन्नर क्षेत्र कर्मनूमिनां थाय, सरवाले पीस्तालीश क्षेत्र मनुष्यनां थयां.

हवे वली ठप्पन्न नेद बीजा देखाडे ले. जंबूद्वीप मांहेला जरत क्षेत्रना उत्तरने ठेहडे हेमवंत नामा पर्वत ले ते पूर्वदिशें अने पश्चिम दिशें लवण समुद्र पर्यंत लांबो ले ते पर्वतनी पूर्व तथा पश्चिम एकेकी दिशें लवण समुद्र मध्ये बे बे दाढाउ नीकली ले तेवारें बे दिशिनी

चार दाढाउं थइ तेवीज रीतें ऐरवत क्षेत्रने दक्षिणने छे
हेडे शिखरी नामें पर्वत छे, ते पण पूर्व पश्चिम हेमवंतना
परें लांबो छे तेमांथी पण हेमवंतनी रीतें बे दिशियें म
ली चार दाढाउं समुद्रमां निकली छे ए बे पर्वतनी आठ
दाढाउं मांहेली एकेकी दाढाने विषे सात सात अंत
र द्वीप छे तेवारें आठ दाढाउंने विषे छप्पन्न अंतरद्वीप
थया तेने विषे पण युगलीयां रहे छे, तेने अंतरद्वीपना
मनुष्य कहीयें, ते मनुष्य एकांतरे आहार लीये छे
तथा तेमना शरीरनी उंचाइ आठसो धनुष्यनी छे अ
ने पल्योपमना असंख्यातमा नाग जेटलुं तेमनुं आ
यु छे ए प्रमाणें मनुष्यना पिस्तालीश नेद पूर्वें कह्या
तेनी साथें ए अंतरद्वीपना छपन्न नेद मेलवतां १०१
नेद थाय तेने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए बे प्रकारें गणी
यें, तेवारें २०२ नेद थाय. तथा वली एहिज ग
र्नेज मनुष्यनां मल, मूत्र, श्लेष्म प्रमुख चौद स्था
नकने विषे उपजे तेनें समूर्छिम मनुष्य कहियें ते स
मूर्छिम मनुष्य सर्व अधुरी पर्याप्तियेंज मरण पामे छे
माटे ए अपर्याप्ताज होय तेथी एना १०१ नेद पूर्वो
क्त २०२ साथें मेलवतां ३०३ नेद मनुष्यना थाय.
ए रीतें मनुष्य पंचेंद्रीना नेद कह्या ॥ २३ ॥

हवे चार निकायना देवोना भेद कहे छेः–

दसहा भवणाहिवई, अठविहा वाण
मंतरा हुंति ॥ जोइसिया पंचविहा,
डुविहा वेमाणिआ देवा ॥ २४ ॥

अर्थः–भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क तथा वैमानिक,ए चार प्रकारना जे देव छे, तेउमांना (दसहा भवणाहिवई के०) भवनाधिपति देवोना दश भेद छे, ते आः–असुरकुमार,नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिशिकुमार, वायुकुमार तथा स्तनितकुमार,ए दश भेद कह्या. हवे एनुं रहेवानुं स्थान कहे छे. रत्नप्रभा नामा प्रथम नरकनुं दल जाडपणे १८०००० योजननुं छे, तेमां तेर पाथडा छे ते तेर पाथडाना बार आंतरा छे, तेमांथी पहेलो अने छेहेलो आंतरो मूकीने बाकीना आंतरा दश, वचाळें रह्या, तेमांहे एकेके आंतरे एकेका भवनपति देवोनी निकाय छे, ते दशे निकायमां प्रत्येकें एक दक्षिणें अने एक उत्तरें मळी बे बे इंद्र छे तेवारें दश निकायना वीश इंद्र छे ए प्रथम भवनपति देवोने रहेवानुं स्थानक कह्युं.

हवे बीजा व्यंतर निकायना देवो कहे छे. (अठ विहा वाणमंतरा हुंति के०) आठ प्रकारना वाणव्यंतर देवो छे तेमां व्यंतर देवोना आठ भेद छे ते आः— पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, तथा गंधर्व; तथा बीजा अणपन्नी, पणपन्नी, रुषिवादी, भूतवादी, कंदित, महाकंदित, कोहंम, पतंग, ए आठ भेद जे छे ते वाणव्यंतर देवोना जाणवा.

मेरुपर्वतना मूलमां सरखी पृथिवी छे तिहांथी मांमी नीचें जइयें तेवारें (१८००००) योजन रत्नप्रभा पृथिवीना तलीया लगण थाय, तेमांथी एक हजार योजन उपर अने एक हजार योजन नीचे मूकीयें बाकी (१७८०००) योजनमां पूर्वोक्त तेर पाथडा छे तेमां दश भवनपतिना देवो रहे छे अने उपरला एक हजार योजन मूक्या छे तेमांथी वली शो योजन हेठल अने शो योजन उपर मूकी बाकी आठशो योजन रह्या तेमां आठ व्यंतरनी निकाय छे, ए आठ निकायमां पण दक्षिण अनें उत्तरदिशि मली एकेकी निकायना बे बे इंद्र छे, तेवारें शोल इंद्र व्यंतर देवोना छे तथा, वली उपरला जे एकशो योजन मूक्या छे तेमांथी वली दश योजन उपर तथा दश

योजन नीचें मूकीयें बाकी एंशी योजन रहे तेमां आठ प्रकारना वाणव्यंतर देवो रहे छे एमां पण पूर्वोक्त रीतें एकेकी निकायने विषे बे बे इंद्र गणतां शोळ इंद्र वाणव्यंतर देवोना छे. सर्व मळी बे प्रकारना व्यंतर देवोना बत्रीश इंद्र छे तेनी साथें पूर्वोक्त भवनपति ना वीश इंद्र मेळवीयें तेवारें बावन इंद्र थाय.

हवे त्रीजी ज्योतिषी देवोनी निकायना देवो कहे छे. (जोइसिया पंचविहा के०) ज्योतिष्क देवोना पांच भेद छे ते आः– चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र तथा तारा; ते फरी बे प्रकारना छेः– एक चर ने बीजा स्थिर तेमां जे मनुष्य क्षेत्रनेविषे छे ते चर एटले अ स्थिर सदा काळ फरता रहे छे,अने जे मनुष्य क्षेत्रथी बाहेर छे ते स्थिर छे केम के तेमनां विमान फरतां नथी जे जिहां छे ते तिहांज स्थिर रह्यां छे, एना पांच भेदमांथी एक चंद्रमा अने बीजो सूर्य, ए बेने इंद्र प दवी छे बीजाने इंद्र पदवी नथी. मेरुने मूळें संभूत ळा पृथ्वीथकी सातशें नेवुं योजन उंचा जइयें तिहां तारानां विमान छे, तिहांथी दश योजनें सूर्यनुं विमान छे, तिहांथी एंशी योजनें चंद्रमानुं विमान छे तिहां थी चार योजन उंचां नक्षत्रनां विमान छे, तेथी उंचां

बार योजनमां वळी जूदा जूदा ग्रहनां विमान छे. ए रीतें सर्व मळी सातशें नेवुं योजनथी उपरें एकशो दश योजनमां ज्योतिषी देव रहे छे.

हवे चोथा वैमानिक देवोनी निकायना देवो कहे छे. (दुविहा वेमाणिया देवा के०) वैमानिक देवो ना बे नेद छे, ते कहे छे. एक तो जे श्रीतीर्थंकरादिकनां पांच कल्याणकने विषे आवे जाय छे ए एनो कल्प एटले आचार कहीये माटे एनें कल्पोपपन्न देवो कहीयें. ते देवता सौधर्म ईशानादि बार देवलोकना नेदें करी बार प्रकारें छे ते बार देवलोकमां वळी आठ देवलोक पर्यंत तो प्रत्येकें ऐकेको इंद्र छे अने नवमो तथा दशमो ए बे देवलोकनो मळी एक इंद्र छे तथा अगियारमो अने बारमो ए बे देवलोकनो पण एक इंद्र छे. ए रीतें बार देवलोकना मळी दश इंद्र छे अने पूर्वें नवनपतिना वीश तथा व्यंतरना बत्रीश अने ज्योतिषीना बे मळी चोपन इंद्र कह्या तेनी साथें ए दश इंद्र मेळवीयें तेवारें सर्वमळी चोशठ इंद्र थाय. ए सर्व कल्पोपपन्न देवता कहेवाय.

हवे बीजा जे कल्प एटले आव्या गयानो आचार तेणें करी रहित छे तेने कल्पातीत देवो कहीयें, तेना

वळी बे भेद छे एक तो नव ग्रैवेयकना अने बीजा पांच अनुत्तर विमानना देवो जाणवा.

हवे ए कल्पोपन्न तथा कल्पातीत देवोना स्थानक कहे छे. चउद राजलोक छे तेमां सात राज नीचें साते नारकीयें करी पूस्यो छे अने सात राज उंचो छे ए चौदराज लोक पुरुषनें आकारें छे, तेमां नाभिने स्थानकें मनुष्य लोक छे अने मेरुने मूलें संभूतला पृथिवी छे तिहांथी सातशें नेवुं योजनथी मांमीने नवशें योजन पर्यंत उंचा ज्योतिषी देवो रहे छे, तेवार पछी एक राजनें आशरे उंचा जइयें तिहां दक्षिणदिशें सौधर्म देवलोक अने उत्तर दिशें ईशान देवलोक, ए रीतें बे देवलोक जोडा जोडें छे. तेवार पछी वळी केटलाएक उंचा जइयें तेवारें वळी त्रीजो सनत्कुमार दक्षिण दिशियें अने चोथो माहेंद्र उत्तर दिशें, ए रीतें बे देवलोक जोडा जोडें छे. तेवार पछी वळी पांचमो ब्रह्मदेवलोक, छठो लांतक, सातमो शुक्र, आठमो सहस्रार, ए चार देवलोक अनुक्रमें एक एकनी उपर केटले केटले आंतरे एकला एकलाज छे. तेवार पछी वळी केटला एक उंचा जइयें तिहां नवमो आनत अनें दशमो प्राणत ए बे देवलोक दक्षिण अने उत्तरें जोडा जोडें छे. तेवार पछी

वली पण केटला एक उंचा जइयें तेवारें अगीयार मो आरण्य अने बारमो अच्युत, ए बे देवलोक दक्षिण अने उत्तरदिशें जोडाजोडें छे, तेवार पछी वली केटलाएक उंचा जइयें तेवारें चउद राजलोकरूप पुरुषना गलानें स्थानकें नव ग्रैवेयक छे. तेवार पछी केटलेक उंचे पांच अनुत्तर विमान छे, तेवार पछी चादराजलोकरूप पुरुषनां ललाटनें ठेकाणे सिद्ध शिला छे ते स्फटिक रत्नी परें निर्मल छे, तिहां सिद्धना जीवो रह्या छे. एम ए देवताने रहेवानां स्थानक कह्यां. हवे इहां वली त्रण प्रकारना किल्बिषिया देवो तथा नव प्रकारना लोकांतिक देवो छे तेने रहेवानां स्थानक बतावे छे, तिहां प्रथम किल्बिषिया देवोनां स्थान कहे छे. एक तो पहेला अने बीजा देवलोकनी नीचें त्रण पल्योपमना आयु वाला रह्या छे अने बीजा वली त्रीजा तथा चोथा देवलोकनी नीचें त्रण्य सागरोपमना आयु वाला रह्या छे, तथा त्रीजा पांचमा अने छठा देवलोकनें नीचें तेर सागरोपमना आयु वाला रह्या छे. ए त्रणे प्रकारना किल्बिषिया देवो चंडालप्राय जाणवा तथा वली पांचमा देवलोकने छेहडे उत्तर अने पूर्वनी अभ्यंतर कृष्णराजीमां नव प्रकारना

लोकांतिक देवो रहे छे, एनुं आठ सागरोपमायु छे.

ए सर्व देवोना बधा मली एकशो ने अठाणुं भेद शास्त्रोमां कह्या छे,ते आ प्रमाणेः—भवनपतिना दश भेद, चर ज्योतिषीना पांच भेद,स्थिर ज्योतिषीना पांच भेद, पांच भरत तथा पांच ऐरवत मली दश क्षेत्रना दश वैताढ्यने विषे रहेनारा तिर्यक् जृंभक देवोना दश भेद, नारकी जीवोने दुःख आपनारा परमाधामीना पंदर भेद, व्यंतरना आठ भेद, वाणव्यंतरना आठ भेद, किल्बिषियाना त्रण भेद, लोकांतिकना नव भेद, बार देवलोकना बार भेद, नव ग्रैवेयकना नव भेद, पांच अनुत्तर विमानोना पांच भेद, ए सर्व मली नवाणुं भेद थया. एने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बेथी गुणतां एकशो ने अठाणुं भेद थाय छे ॥ २४ ॥

ए रीतें पूर्वोक्त तिर्यंचना अडतालीश, नारकीना चौद, मनुष्यना त्रणशें नें त्रण तथा देवताना एकशो ने अठाणुं मली जीवोना ५६३ भेदो थया. एम चौद राजलोकमां जीवादिक छ द्रव्य छे, तेमां एक जीवद्रव्यना संसारी ने सिद्ध,ए बे भेद पूर्वें कह्या हता,तेमांथी संसारी जीवोना पांचशें त्रेशठ भेद संक्षेपें कही देखाड्या, ए संसारी जीवोनो विचार कह्यो.

हवे बीजा सिद्ध जीवोना भेद कहे छेः—

सिद्धा पनरस भेया, तित्थ अतित्थाइ सिद्ध भेएणं ॥ एए संखेवेणं, जीव विगप्पा समख्काया ॥ २५ ॥

अर्थः—(सिद्धा के०) सर्व कर्मोथी मुक्त थएला जीवो, तेना (तित्थ अतित्थाइ के०) तीर्थंकर तथा अतीर्थंकरादि (सिद्धभेएणं के०) सिद्धना भेदें करी (पनरस भेया के०) पंदर भेद थाय छे. ते पंदर भेदनां नाम नवतत्त्वना बालावबोधथकी जाणवां. (एए संखेवेणं के०) ए पूर्वोक्त सर्व संक्षेपें करीने (जीव विगप्पा के०) जीवना विकल्प एटले भेद (समख्काया के०) रूडे प्रकारें कह्या छे ॥२५॥

हवे जे आगल कहेवा योग्य छे ते मूल ग्रंथ कर्त्ता पोतेंज गाथा वडे कहे छे.

एएसिं जीवाणं, सरीरमाऊ ठिई सकायंमि ॥ पाणा जोणिपमाणं, जेसिं जं अत्थि तं भणिमो ॥ २६ ॥

अर्थः—(एएसिं के०) ए पूर्वोक्त एकेंद्रियादिक

(जीवाणं के०) जीवोना एक (सरीर के०) शरीरोनुं प्रमाण, बीजुं (आऊ के०) जघन्यथी तथा उत्कृष्ठथी आयुष्यनुं प्रमाण, त्रीजुं (ठिई सकायंमि के०) एकेंद्रियादिक जीवो मरण पामीने फरि त्यांज उत्पन्न थाय,एवी जे स्वकायस्थिति तेनुं प्रमाण, चोथुं (पाणा के०) इंद्रियादिक दश प्राणनुं प्रमाण, पांचमुं (जोणि पमाणं के०) चोराशी लक्ष योनिमांहेली कया कया जीवोमां केटली केटली योनियो होय तेनुं प्रमाण, (जेसिंजंअत्थि के ०) जे जे जीवोनुं जेटलुं छे,(तं नणीमो के०) ते जीवोनुं तेटलुं अमे कहीशुं ॥ २६ ॥

तिहां प्रथम शरीरना प्रमाणनो प्रकार कहे छेः–

अंगुल असंख नागो, सरीर मेगिं
दियाण सव्वेसिं ॥ जोयण सहस्स
महियं, नवरं पत्तेय रुक्खाणं ॥ २७ ॥

अर्थः–(सव्वेसिं एगिंदियाण सरीरं के०) सर्वे सूक्ष्म तथा बादर पृथ्वीकाय प्रमुख एकेंद्रिय जीवोना शरीरोनुं प्रमाण (अंगुल असंख नागो के०) अंगुलना असंख्यातमा नाग जेटलुं होय छे. (नवरं के०) पण एटली विशेषता छे. जे (पत्तेय रुक्खाणं के०)

प्रत्येक वनस्पतिना शरीरनुं प्रमाण, (जोयण सहस्स महियं के०) एक हजार योजनथी कांइक अधिक होय छे. ते समुद्रादिकनेविषे उत्सेधांगुल प्रमाण हजार योजनना उंडा पाणीमां पद्मनाल होय छे तथा आ अढी द्वीपथी बाहेर एवी लताउ पण होय छे. आहिं यद्यपि सामान्यपणे पृथ्विकायादिक एकेंद्रियजीवोना शरीरोनुं प्रमाण अंगुलनो असंख्यातमो नागमात्र कह्युं छे तथापि संग्रहिण्यादिकनेविषे विशेषें करी जाणवामां आवे छे, के अंगुलना असंख्यातमा नागना पण असंख्य नेद छे माटें ते प्रमाणें अहींआं पण कहेवुं ॥२७॥ एवी रीतें एकेंद्रियना शरीरनुं प्रमाण कह्युं.

हवे द्वींद्रियादिक विकलेंद्रिय जीवोना शरीरोनुं प्रमाणे कहे छेः—

बारस जोयण तिन्नेि, व गाउआ जो
यणं च अणुकमसो ॥ बेइंदिय ते
इंदिय, चउरिंदिय देह मुच्चत्तं ॥२८॥

अर्थः—मनुष्यक्षेत्रनी बाहिर रहेला (बे इंदिय के०) शंखादिक बेंद्रियजीवना शरीरनी उंचाई (बारस जोयण के०) बार योजननी होय छे. अढी द्वीपनी बाहे

र रहेला (तेइंदिय के०) कर्णशृंगालादिक तेंद्रिय जीवोना शरीरनी उंचाई (तिन्नेव गाउआ के०) त्रण गाउनी होय छे. तथा अढी द्वीपनी बाहेर रहेला (चउरिंदिय के०) भ्रमरादिक चउरिंद्रिय जीवोना (देहमुच्चत्तं के०) शरीरनुं उंचपणुं (जोयणंच के०) एक योजननुं होय छे (अणुकमसो क०) गाथाना पदना अनुक्रमें एटले बे इंद्रियने बार योजन वगेरे कहेवा ॥ १८॥ ए विकलेंद्रिय जीवोना शरीरोनुं प्रमाण कह्युं.

हवे नारकी आदिक पंचेंद्रियना शरीरोनुं
प्रमाण कहेतो थको प्रथम नारकी
जीवोना शरीरनुं प्रमाण कहे छे.

धणुसय पंच पमाणा, नेरइया स
त्तमाइ पुढवीए ॥ तत्तो अद्धद्धूणा,
नेया रयणप्पहा जाव ॥ १९ ॥

अर्थः—(सत्तमाइ पुढवीए के०) तमस्तमःप्रभा नामनी सातमी आदि नरकपृथ्वीमां रहेनारा (नेरइया के०) नारकीउना शरीरोनुं प्रमाण आवी रीतें छेः—(धणुसय पंच पमाणा के०) सातमी पृथ्वीना नारकीउना शरीरोनुं प्रमाण पांचशें धनुष्य जेटलो

उंचाईनुं छे. एम अनुक्रमें (तत्तो अद्धद्धूणा के०) तेथी अर्द्ध अर्द्ध संख्या उणी करवी, एटले अढीशें धनुष्य जेटला प्रमाणनुं शरीर छठी पृथ्वीना नारकीयोनो होय छे. सवाशो धनुष्य उंचाइनुं प्रमाण पांचमी पृथ्वीना नारकीयोना शरीरोनुं होय छे. साडा बासठ धनुष्य ऊंचाईनुं प्रमाण चोथी पृथ्वीना नारकीयोना शरीरोनुं होय छे. सवा एकत्रीश धनुष्य ऊचाईनुं प्रमाण त्रीजी पृथ्वीना नारकीयोना शरीरोनुं होय छे. साडा पंदर धनुष्य अने बार अंगुल उंचाईनुं प्रमाण बीजी पृथ्वीना नारकीयोना शरीरनुं होय छे. एम अनुक्रमें (जाव रयणप्पहा के०) यावत् रत्नप्रभा नामनी पहेली पृथ्वीना नारकीयोना शरीरोनुं प्रमाण पोणा आठ धनुष्य अने छ अंगुलनुं (नेया के०) जाणवुं. एटलुं स्वाभाविक देहनुं प्रमाण होय छे ते कह्युं; पण एनुं वैक्रिय शरीरनुं प्रमाण तो एथी बमणुं होय छे॥ २९॥ एम नारकीयोना शरीरोनुं प्रमाण कह्युं.

हवे तिर्यंच पंचेंद्रिय जीवोना शरीरोनुं प्रमाण अढी गाथायें करी कहे छेः—

जोयण सहस्स माणा, मछा उरगा

य गप्नया हुंति ॥ धणुअ पुहुत्तं पक्खिसु,
भुयचारी गाउ अ पुहुत्तं ॥३०॥ खयरा
धणुअ पुहुत्तं, भुयगा उरगा य जोयण
पुहुत्तं ॥ गाउय पहुत्त मित्ता, समुच्छिमा च
उप्पया भणिया ॥ ३१ ॥ छच्चेव गाउआ
इं, चउप्पया गप्नया मुणेयव्वा ॥

अर्थः—तिर्यंच जीवो गर्भज अने संमूर्छिम ए बे प्रकारना होय छे, तेमां गर्भजना शरीरनुं प्रमाण आ वी रीतेंः—(मछा उरगाय सहस्स जोयण माणा के०) मत्स्य अने उरःपरिसर्पना शरीरनुं प्रमाण एक हजार योजननुं होय छे. एवा मोहोटा मत्स्यो स्वयंभु रमण समुद्रमां होय छे. अने एवा उरःपरिसर्पो अढी द्वीपथी बाहेर होय छे. (पक्खिसु धणुअ पुहुत्तं के०) पक्षीयोना शरीरनुं प्रमाण धनुष पृथुत्व एटले बे धनु षथी लईने नव धनुष सुधी होय छे. अने (भुयचारी गाउअ पुहुत्तं के०) गोधादिक भुजपरि सर्पना शरीरनुं प्रमाण गव्यूति पृथुत्व एटले बे गाउथी मांडी नव गाऊ सुधी होय छे. ए बधा जीवो (गप्नया हुंति के०) गर्भज छे ॥३०॥ हवे संमूर्छिमना शरीरनुं प्रमाण्ण आवी

रीतेंः– (खयरा भुयगा धणुअ पुहुत्तं के०) खेचर एटले पक्षीउ, अने भुजग एटले भुजपरि सर्पनां शरीरोनुं प्रमाण धनुष पृथुत्व एटले बे धनुषथी मांमीनें नव धनुषसुधी होय ठे. तथा (उरगाय जोयण पुहुत्तं के०) उरग एटले उरःपरिसर्पना शरीरनुं प्रमाण योजन पृथुत्व एटले बे योजनथी मांमीनें नव योजन सुधी होय ठे अने (चउप्पया गाउय पुहुत्तं मित्ता के०) चतुष्पद एटले चार पगवाला जीवोना शरीरनुं प्रमाण गाउपृथुत्व एटले बे गाउथी मांमीने नव गाउ सुधी होय ठे. एवी रीतें (समुच्छिमा जणिया के०) संमूर्छिम तिर्यंच जीवोना शरीरोनुं प्रमाण कह्युं ठे. केटलांएक पुस्तकोमां "भुयगा उरगाय जोयण पुहुत्त" एवो पाठ ठे,ए प्रमाणे अर्थ करतां भुजपरि सर्पना शरीरनुं प्रमाण योजन पृथुत्व थाय ठे ते समीचीन नथी. केम के, प्रज्ञापना तथा संग्रहिण्यादि सूत्रोथी विरुद्ध ठे ॥३१॥ अने (चउप्पया गप्नया ठच्चेव गाउआइं के०) गर्नज चतुष्पद जीवोना शरीरोनुं प्रमाण उत्कर्षथी ठ गाऊनुं (मुणेयवा के०) मनाय ठे. एवा मोटा शरीरना हस्तिउ देवकुर्वादिक युगलीयानां क्षेत्रोमां होय ठे.

हवे पंचेंद्रिय मनुष्यना शरीरनुं प्रमाण
गाथाना उत्तरार्द्ध वडे कहे छेः–

कोस तिगं च मणुस्सा, उक्को
स सरीर माणेणं ॥ ३२ ॥

अर्थः–(मणुस्सा उक्कोस सरीर माणेणं के०) उत्कृष्टथी मनुष्यना शरीरनुं प्रमाण (कोसतिगं के०) त्रण कोशनुं होय छे. ते देवकुर्वादिक क्षेत्रोनां युगलीयां जाणवां ॥ ३२ ॥ ए मनुष्यनां शरीर कह्यां.

हवे देवोना स्वाभाविक शरीरोनुं प्रमाण कहे छेः–

ईसाणंत सुराणं, रयणीउ सत्त हुंति
उच्चत्तं ॥ दुग दुग दुग चउ गेवि, ज्ज
णुत्तरे इक्किक्क परिहाणी ॥ ३३ ॥

अर्थः–(ईसाणंत सुराणं के०) बीजा ईशान देवलोकना अंत सुधी जे भुवनपति, व्यंतर तथा ज्योतिष्क देव छे तेउना शरीरोनी (उच्चत्तं के०) उचाई (सत्त रयणीउ हुंति के०) सात हाथनी होय छे. त्यार पछी "दुग दुग दुग चउ गेविज्जऽणुत्तरे इक्किक्क परिहाणी" अनुक्रमें एकेक हाथ घटाडतां जवुं. जेम के,

सनत्कुमार अने माहेंद्र ए (छुग के०) छिक, एट बन्ने देवलोकमांना देवोना शरीरोनुं ऊंचाईनुं प्रमाण ब हाथनुं होय बे. ब्रह्म अने लांतिक ए (छुग के०) बे देवलोकमां पांच हाथ होय बे; शुक्र अने सहस्रार ए (छुग के०) बे देवलोकमां चार हाथ होय बे; ए त्रण छिक कह्यो अने आनत, प्राणत, आरण्य तथा अच्युत ए (चउ के०) चार देवलोकमां त्रण हाथ होय बे; (गेविज्ज के०) नव ग्रैवेयकमां बे हाथ होय बे. अने (अणुत्तरे के०) पांच अनुतरवासी देवलोकमांना देवोना शरीरोनुं प्रमाण एक हाथनुं होय बे. ए रीतें (इक्कि क्कपरिहाणी के०) एकेक हाथनी हाणी करतां जवुं तेवारें पूर्वोक्त मान थाय. ए सर्व जीवोना शरीरोनुं प्रमाण उत्सेधांगुलनी रीतें जाणवुं ॥ ३३ ॥

हवे जीवोना आउखानुं बीजुं द्वार कहे बेः—

बावीसा पुढवीए, सत्तय आउस्स ति
न्नि वाउस्स ॥ वास सहस्सा दस तरु,
गणाणं तेउ तिरित्ताउ ॥ ३४ ॥

अर्थः—(पुढवीए बावीसा के०) पृथ्वीकाय जीवोनुं आयु उत्कर्षथी बावीश हजार वर्षनुं होय बे

(सत्तय श्राउस्स के०) अप्काय जीवोनुं श्रायु सात हजार वर्षनुं, (वाउस्स तिन्नि के०) वायुकाय जीवोनुं श्रायु त्रण हजार वर्षनुं (तरुगणाणं के०) प्रत्येक वनस्पति समूहनुं श्रायुष्य, (दस सहस्सा वास के०) दश हजार वर्षनुं होय ळे. श्रने (तेउ त्तिरित्ताउ के०) तेजस्काय जीवोनी उत्कृष्ट श्रायुःस्थिति त्रण श्रहोरात्रनी होय ळे. श्रने ए बधा जीवोनुं जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनुं श्रायुष्य होय ळे ॥ ३४ ॥

हवे विगलेंड्रिय जीवोनुं श्रायु कहे ळे.

वासाणि बारसाऊ,बि इंदियाणं ति
इंदियाणं तु ॥ अउणा पन्न दिणाइं,
चउरिंदीणं तु ळम्मासं ॥ ३५ ॥

श्रर्थः–(बिइंदियाणं बारसाऊ वासाणि के०) बेंड्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी बार वर्षनुं श्रायुष्य होय ळे. (तिइंदियाणंतु के०) त्रींड्रिय जीवोनुं श्रायुष्य (श्रउणा पन्न दिणाइं के०) उंगण पचास दिवसनुं होय ळे. श्रने (चउरिंदीणंतु के०) चतुरिंड्रिय जीवोनुं श्रायुष्य (ळम्मासं के०) ळ महिनानुं होय ळे. तेम

ज ए सर्वनुं जघन्यथी पूर्ववत् अंतर्मुहूर्त्तनुं आयुष्य होय छे ॥३५॥ ए विकलेंद्रियनुं आयुष्य कह्युं.

हवे पंचेंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी आयुःप्रमाण कहे छेः—

सुर नेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि ति
त्तीसं ॥ चउपय तिरिय मणुस्सा, तिन्निपप
लिउवमा हुंति॥३६॥ जलयर उर भुयगा
णं, परमाऊ होइ पुव्व कोडीउ॥पक्कीणं पुण
भणिउ, असंख भागो अ पलियस्स॥३७॥

अर्थः—(सुर नेरइयाणठिई के०) देव अने नारकीयोना आयुष्यनी स्थिति, (उक्कोसा के०) उत्कृष्टथी (तित्तीसं सागराणि के०) तेत्रीश सागरोपमनी होय छे. एटलुं आयुष्य पांच अनुत्तर विमानोना देवोनुं तथा सातमी नरकना जीवोनुं उत्कृष्टथी जाणी लेवुं. अने (चउपय के०) चतुष्पद एटले चार पगवाला (तिरिय के०) तिर्यंच जीवोनुं तथा (मणुस्सा के०) सर्व प्रकारना माणसोनुं उत्कृष्टथी (तिन्निपपलिउवमा के०) त्रण पल्योपमनुं आयुष्य (हुंति) होय छे. एवा आयुष्यवाला जीवो देव कुर्वादिक क्षेत्रोमां होय छे. अहिं पल्योपम तथा सागरोपमने विषे

सूक्ष्मताथी अथवा विशेषण विशिष्टनुं ग्रहण कर्या थी देव तथा नारकीयोनुं जघन्यथी आयुष्य दश हजार वर्षनुं होय छे. अने मनुष्य तथा तिर्यंच जीवोनुं जघन्यथी पूर्वनी पेठें अंतर्मुहूर्त्तनुं आयुष्य होय छे॥३६॥

गर्भज अने संमूर्छिम ए बे प्रकारना (जलयर के०) जलचर जीवो छे. (उर के०) उदरथी चालनारा जे सर्पो छे, (भुयगाणं के०) भुजाथी चालनारा जे नोलिया प्रमुख जीवो छे, तेउनुं (परमाऊ के०) उत्कृष्टथी आयुष्य (पुव्वकोडीउ के०) पूर्व कोडीनुं (होइ के०) होय छे. सित्तेर लाख अने छप्पन्न हजार कोटि वर्षनो एक पूर्व थाय छे. एवा एक कोटि पूर्वनुं आयुष्य जाणवुं. (पक्कीणं के०) पक्षीउनुं (पुण के०) तेवी रीतेंज (पलियस्स असंखभागोअ के०) पल्योपमना असंख्यातमा भाग जेटलुं आयुष्य(भणिउ के०) कहेलुं छे. ए गर्भज पक्षीयोनुं आयुष्य जाणवुं. आ प्रकरणमां संमूर्छिम.स्थलचर तथा खेचरादि पंचेंद्रियोनुं उत्कृष्टथी आयु कह्युं नथी,पण बीजा ग्रंथोमां कहेलुं छे, ते आ प्रमाणेः—‘समुच्छि पणिंदि थलयर, खयर उरग भुयय जिठ ठिइ कमसो; वास सहस्सा चुलसी, बिसत्तरी तिपन्न बायाला ॥१॥ इति ॥ ३७ ॥

हवे सूक्ष्मादि जीवोना आयुष्यनुं प्रमाण कहे छेः—

सव्वे सुहुमा साहा, रणा य संमुच्छि
मा मणुस्सा य ॥ उक्कोस जहन्नेणं,
अंतमुहुत्तं चिय जियंति ॥ ३८ ॥

अर्थः—(सव्वे के०) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, तथा वनस्पतिकाय, ए सर्वे (सुहुमा साहारणाय के०) सूक्ष्म तथा बीजा साधारण एटले बादर निगोदरूप जे अनंतकाय जीवो छे ते अने (संमुच्छिमा मणुस्साय के०) संमूर्छिम मनुष्यो जे एकशो ने एक क्षेत्रोनेविषे उत्पन्न थयेला गर्भज मनुष्योनांज मल मूत्र, तथा वातादिकने विषे उत्पन्न थाय छे, ते बधा (उक्कोस के०) उत्कृष्टथी (जहन्नेणं के०) जघन्यथी (अंत मुहुत्तं चिय के०) एक अंत र्मुहूर्त्त मात्रज (जियंति के०) जीवे छे ॥ ३८ ॥

उपला बे द्वारमां जे कह्युं, ते गाथावडे सूचवे छेः—

उगाहणाउ माणं, एवं संखेवउ स
मक्खायं ॥ जे पुण इत्थ विसेसा, वि
सेस सुत्ताउ ते नेया ॥ ३९ ॥

अर्थः—(उगाहणाउमाणं के०) जेनेविषे जीवनी स्थिति होय छे. जेमां जीव रहे छे तेने अवगाहना कहियें,एवुं जे प्रत्येक जीवनुं शरीर तेना आयुष्यनुं प्रमाण (एवं के०) एवी रीतें (संखेवउ के०) संक्षेपें करी (समख्कायं के०) समाख्यातं एटले कह्युं. परंतु (जे पुण इह के०) अत्रे हजी जे कांई देवलोकादिकनेविषे प्रतरादि आश्रित (विसेसा के०) विशेष अवगाहना तथा आयुना भेद छे. (ते विसेस सुत्ताउ के०) ते विशेष सूत्र जे संग्रहिणी तथा प्रज्ञापनादिक सूत्रो छे तेथकी (नेया के०) जाणी लेवा ॥३९॥ ए रीतें अवगाहना तथा आयुःस्थिति मली बे द्वार कह्यां.

हवे त्रीजुं, स्वकायस्थितिद्वार कहे छेः—

एगिंदिया य सवे, असंख उस्सप्पि
णी सकायंमि ॥ उववज्जंति चयंति
अ, अणंतकाया अणंताउ ॥४०॥

अर्थः—(सव्वे एगिंदियाय के०) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय अनें वनस्पतिकाय, ए जे पंच स्थावर एकेंद्रिय छे. ते सर्व (असंख उस्सप्पिणी के०) असंख्य उत्सर्प्पिणी तथा अवसर्प्पिणी सुधी

(सकायंमि के०) तेज पोतानी कायनेविषे (उवव ज्जंति के०) उत्पन्न थाय छे, अने (चयंतिअ के०) मरणने पामे छे. अर्थात् तेज कायमां उत्पन्न थईने फरी त्यांज नाशने पामे छे,तथा (अणंतकाया के०) अनंत काय वनस्पति जीवो जे छे ते (अणंताउ के०) अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी सुधी यावत् स्वकायमां उत्पन्न थईने तेज कायमां नाश पामे छे॥४०॥ एवी रीतें एकेंद्रिय जीवोनी काय स्थिति कही.

हवे द्वींद्रियादि विकलेंद्रियनी कायस्थिति कहे छेः—

संखिज्ज समा विगला, सत्तठ भवा
पणिंदि तिरि मणुया ॥ उववज्जंति
सकाए, नारय देवा अ नो चेव ॥ ४१ ॥

अर्थः— (विगला संखिज्ज समा के०) बेंद्रिय तेंद्रिय तथा चउरिंद्रिय ए जे विकलेंद्रिय जीव छे, ते संख्याता वर्ष सुधी (उववज्जंतिसकाए के०) उपपद्यंति स्वकाये एटले स्वकायने विषे उत्पन्न थाय छे. अने चवे छे तथा (पणिंदि तिरि मणुया के०) पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य ए बे जातिना जीवो ते तेवाज नवपणे केडावेडें (सत्तठभवा के०) सात अथवा आठ

नव करे ढे. सात नव तो उत्कृष्ट संख्याता वर्ष सुधी मां थई शके ढे अने उत्कृष्ट असंख्याता वर्ष सुधीमां आठ नव थई शके ढे. एटले आठ नवमां पूर्वकोटी पृथक्त्व अने त्रण पल्योपम अधिक काल जाणी लेवो. अने जघन्यथी सर्वत्र कायस्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी जाणी लेवी. तथा (नारय देवाअ नोचेव के०) नारकी जीवो अने देवो मरण पामीने फरी तेज गतिमां उत्पन्न थता नथी एटले नारकी मरीने फरी नारकीमां न उपजे अने देवता मरी फरी देवतामां न उपजे अवश्य एक बे नव बीजी गतिमां करीने पढी ते गतिमां उपजे, तेम वली देवता मरी नरकमां पण न जाय अने नारकी मरी देवमां पण न जाय. ए त्रीजुं स्वकायस्थिति द्वार कह्युं ॥ ४१ ॥

हवे चोथुं प्राण द्वार कहे ढेः—

दसहा जियाण पाणा, इंदि उसासाउ
जोग बलरूवा ॥ एगिंदिएसु चउरो, विग
लेसु ढ सत्त अठेव ॥४२॥ असन्नि सन्नि
पंचिं,दिएसु नव दस कमेण बोधव्वा ॥ तेहिं
सह विप्पओगो, जीवाणं जमए मरणं ॥४३॥

अर्थः-(दसहा जियाण पाणा के०)जीवोना दश प्रकारनां प्राण होय छे. ते कहे छे (इंदि के०) इंडियो, (उसास के०) श्वासोछ्वास, (आउ के०) आयु तथा (जोगबलरूवा के०) योगनां बलरूप जाणवां. एटले स्पर्शनादि पांच इंडियो, छठो उछ्वास निःश्वास, सातमुं आयु तथा मन, वचन, काय, ए त्रण योगनां त्रण बल मली दश प्राण छे. तेमां (एगिंदिएसु के०) एकेंडिय जीवोने स्पर्शनेंडिय, श्वासोछ्वास, आयु तथा कायबल,ए (चउरो के०) चार प्राण होय छे. अने (विगलेसु के०) विकलेंडिय एटले द्वींडिय जीवो ने स्पर्शनेंडिय,रसनेंडिय, श्वासोछ्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (छ के०) छ प्राण होय छे. त्रींडिय जीवोने स्पर्शनेंडिय, रसनेंडिय,घ्राणेंडिय, श्वासोछ्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (सत्त के०) सात प्राण होय छे. चतुरिंडिय जीवोने स्पर्शनेंडिय, रसनेंडिय, घ्राणेंडिय, श्रोत्रेंडिय, श्वासोछ्वास, आयु, कायबल, तथा वचनबल,ए (अठेवके०) आठ प्राण होयछे॥४१॥

(असन्नि सन्नि पंचिंदिएसु के०) असंज्ञी पंचेंडिय तथा संज्ञी पंचेंडिय जीवोने (नव दस के०) नव अने दश (कमेण के०) क्रमें करी (बोधव्वा के०)

जाणवा. एटले असंज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने एक मनो बल होतुं नथी बाकीनां नवे प्राणो होय छे. अने संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने दशे प्राणो होय छे. ए प्राण जेने जेटला कह्यां छे ते जीवने (तेंहिँ सहविप्पडगो के०) ते प्राणोनो जे वियोग थाय छे ते (जीवाणं मरणं नप्पए के०) जीवने मरण कहेवाय छे. वली जिहां उपजे, तिहां एक आयु तो पूर्वला नवनुं बांधे लुं होय बाकी बीजां सर्व नवां प्राण अने नवी पर्याप्ति उपजती वेलायें बांधे. इहां देव, नारकी, गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्य एवा संज्ञी पंचेंद्रिय कहेवाय छे; अने संमूर्छिम तिर्यग् तथा संमूर्छिम मनुष्य असंज्ञी पंचेंद्रिय कहेवाय छे. तेउमां संमूर्छिम मनुष्यो तो नाषारूप वाग्बलादिकें करी रहित होवाथी तेउ सात तथा आठ प्राणवाला कह्या छे ॥ ४३ ॥

अहीं एवी आशंका उत्पन्न थाय छे के, जीवने प्राण वियोगरूप जे मरण कह्युं ते केटला काल सुधी थया करे छे ? एहना निरासार्थे उत्तर कहे छेः-

एवं अणोरपारे, संसारे सायरंमि
नीमंमि ॥ पत्तो अणंत खुत्तो,
जीवेहिं अपत्त धम्मेहिं ॥ ४४ ॥

अर्थः— (अपत्त धम्मेहिं के०) जेउने धर्मनी प्राप्ति थई नथी एवा (जीवेहिं के०) जीवोने (एवं के०) पूर्वे कही आव्या तेम आ (अणोरपारे के०) पारावार रहित एटले जेनी आदि पण नथी अने अंत पण नथी एवो (नीमंमि के०) महा नयंकर (संसारे सायरंमि के०) संसार रूप समुड्नें विषे (अणंत खुत्तो के०) अनंतवार प्राणवियोगरूप मरण (पत्तो के०) प्राप्त थाय ठे ॥४४॥ ए चोथुं प्राण द्वार कह्युं.

एटले जे जीव धर्म नथी पाम्या ते जीव एकेकी योनिने विषे अनंती अनंती वार मरण जीवन प्रत्यें करे ठे. योनि एटले जे स्थानमां घणा जीवोनो एक वर्ण,एकगंध,एक रस, एक स्पर्श, एटला वानां सरखां बरोबर होय, ते सर्व जीवोनी एक योनि कहीयें. ते योनियो केटली ठे ते सर्व जातिना जीवोनी जूदी जूदी संख्यायें आगली गाथायें कहे ठे.

हवे पांचमुं योनि द्वार कहे ठेः—

तह चउरासी लस्का,संखा जोणीण होइ जीवाणं ॥ पुढवाईण चउण्हं, पत्तेयं सत्तसत्तेव ॥ ४५ ॥ दस पत्तेय तरूणं,

चउदस लक्खा हवंति इयरेसु ॥ विगलिं
दिएसु दो दो, चउरो पंचिंदि तिरियाणं
॥ ४६ ॥ चउरो चउरो नारय, सुरेसु मणु
आण चउदस हवंति ॥ संपिंडिया य स
व्वे, चुलसी लक्खाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥

अर्थः- (तह के०) तथा (जीवाणं के०) जीवोनी (जोणीण के०) योनिनी (संखा के०) संख्या (चउरासी लक्खा के०) चोराशी लक्ष (होइ के०) छे. जीवोनुं जे उत्पत्तिस्थानक ते योनि कहेवाय छे. तेउमां (पुढवाईण चउण्हं के०) पृथ्व्यादिक चार. एटले पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय तथा वाउकाय, ए चार प्रकारना जीवोनी (पत्तेयं के०) प्रत्येकनी (सत्तसत्तेव के०) सात सात लाख योनियो जाणवी. एम चारेनी सर्व मली अगावीश लक्ष योनिउ थई ॥ ४५ ॥ (पत्तेय तरूणं के०) प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवोनी (दस के०) दस लक्ष योनियो छे (इयरेसु के०) इतरेषु एटले एथी इतर जे साधारण वनस्पतिकाय जीवो छे तेनी (चउदस लक्खा के०) चउद लक्ष योनियो (हवंति के०) छे. (विगलेंदिए

सु दो दो के०) विकलेंद्रिय एटले बेंद्रिय जीवोनी बे लाख, तेंद्रिय जीवोनी बे लाख, तथा चतुरिंद्रिय जीवोनी पण बे लाख योनियो जाणवी; अने (पंचिंदि तिरियाणं के०) पंचेंद्रिय तिर्यक् जीवोनी (चउरो के०) चार लक्ष योनियो छे ॥ ४६ ॥ (चउरो नारय के०) नारकी जीवोनी चार लक्ष योनियो छे, (सुरेसु चउरो के०) देवोनी पण चार लक्ष योनियो छे (मणुआण के०) मनुष्य प्राणीयोनी (चउद स हवंति के०) चौद लाख योनियो छे. एवी रीतें (संपिंमियाय के०) बधीने एकठी करतां शरवालें (सव्वे के०) सर्व (चुलसी के०) चोराशी (लरकाउ के०) लाख (जोणीणं के०) योनियो थाय छे ॥४७॥

एवी रीतें संसारी जीवो विषयिक शरीरनुं मान, आउखानी स्थिति, कायस्थिति, प्राण अने योनि ए पांच द्वार कह्यां. हवे सिद्ध जीवो विषयक कहे छेः—

सिद्धाण नत्थि देहो, न आउ कम्मं
न पाण जोणीउ ॥ साइ अणंता तेसिं,
ठिई जिणंदाऽऽगमे नणिया ॥ ४८ ॥

अर्थः— (सिद्धाण देहो नत्थि के०) सिद्ध परमा

त्माने शरीर नथी. माटे (न आउ कम्मं के०) आयु अने कर्म पण नथी. अने ज्यां आयु न होय त्यां (पाण जोणीउ न के०) प्राण अने योनि पण नथी. ए सर्वनो अनाव होवाथी कायस्थित्यादिकनो पण अनाव दर्शाव्यो. एम सर्व कर्मोपाधि विमुक्त अने जेउ लोकना अग्रनागने विषे स्थित छे. (तेसिं के०) ते सिद्ध जीवोनी (साइ अणंता विई के०) सादि अनंतस्थिति, ते (जिणंदाऽऽगमे के०) जिनेंद्र प्रणीत सिद्धांतोनेविषे (नणिया के०) कही छे. एटले जे दिवसें अहींथी सिद्धमां गमन थाय ते दिवसें सिद्धने सादिपणुं कह्युं छे, अने फरी त्यांथी चवननो अनाव होवाथी अनंतपणुं छे ॥ ४७ ॥

हवे फरि संसारी जीवविषे कहे छेः—

काले अणाइ निहणे, जोणी गहणंमि
नीसणे इब ॥ नमिया नमिहंति चिरं,
जीवा जिण वयण मलहंता ॥ ४ए ॥

अर्थः— आदि एटले प्रारंन, निधन एटले नाश ए बन्ने शब्दो विनक्ति विनाना होवाथी तेउनुं एक अन्वयित पद "आदि निधन" एम थाय छे. ए पदनो अ

थी वृत्तिकार आम करे छेः- जेनो प्रारंभ अने नाश दीठामां आवतो नथी, तेने अनादि निधन कहियें. ए (अणाइ निहणे काले के०) अनादि अनंत काळने विषे (जिण वयण मलहंता जीवा के०) हितोपदेश रूप जिनवचनने जे जीवो पाम्या नथी, तेउ (जोणी के०) चोराशी लाख संख्यावाळी जे योनि तेणें करी (गहणंमि के०) महा गहन दुःख देनारो, (भीसणे के०) भयने देनारो (इह के०) इहां वर्णव्यो एवो जें आ संसार तेने विषे (भमिया के०) अतीत काळने विषे भटकेला छे, फरि (भमिहंति चिरं के०) आगल आगामिक काळमां पण घणो भ्रमण करशें ॥ ४ए ॥

हवे ग्रंथकार पोताना नामनी सूचना करतो बतो धर्मोपदेश कहे छेः-

ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुल्लहे वि
सम्मत्ते ॥ सिरि संति सूरि सिठे,
करेह भो उज्जमं धम्मे॥ ५० ॥

॥ अर्थः-(ता के०) ते पूर्वोक्त कारण माटे (भो के०) हे भव्य जीवो, (संपइ के०) सांप्रत आ समयने विषे दश दृष्टांतें करी (दुल्लहे के०) दुर्लभ